शोध मंथन Vol. XI No.IV Oct.-Dec. 2020 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 7.760 (SJIF)

हिन्दी के प्रचार–प्रसार में प्रादेशिक हिन्दी सेवी संस्थाओं की भूमिका

डॉ0 शालिनी सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
अखिल भाग्य स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
रानापार, गोरखपुर
ईमेलः shalinisingh200180@gmail.com

सारांश

हिन्दी साहित्य का विकास मानव–भावना की अभिव्यक्ति एवं चेतना का प्रस्फुटन दोनों विभिन्न काल खण्डों में विकसित होता रहा, जिससे हिन्दी सेवी संस्थानों का योगदान साहित्य एवं समाज को एक दिशा, प्रगति एवं दर्शन कषतिकार करती है। ब्राह्मण्ड की सभी वस्तुएँ स्थायी और चिरंतर नहीं हैं यह समय के अनुरूप परिवर्तनशीलता है, यही परिवर्तन हिन्दी साहित्य के क्षेत्र की व्यापकता का आधार है।

हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में मान्यता का एक आंदोलन जो आजादी से प्रारम्भ हुआ वह अभी निरंतर बना हुआ है। जिसमें हिन्दी सेवी संस्थाएँ, शिक्षण संस्थाएँ, प्रकाशन, लेखक, चिंतक अनेक संगोष्ठियों का आयोजन लिखित एवं मौखिक रूप से प्रचार–प्रसार का माध्यम है जो दिन पर दिन सबल होता जा रहा है। भारत की विभिन्न भाषाओं में हिन्दी अपना स्थान बनाने में सफल रही। इस प्रकार हम कह सकते है कि हिन्दी के प्रचार–प्रसार में प्रादेशिक हिन्दी सेवी संस्थाएँ एक स्तम्भ के रूप में स्थापित है।

मुख्य शब्दः *पुनरूत्थान, हस्तलिखित, संदर्भित, अंतर्राष्ट्रीय, ग्रंथावलियाँ, परिवर्धन, सभापतित्व, सम्मेलन, संवर्द्धन, स्वायत्तशासी।*

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य के विकास में विभिन्न काल खण्डों का योगदान प्रत्येक सोपान पर समृद्धि होता गया। आजादी के पहले से ही हिन्दी के विकास में अनेक साहित्यकारों ने अपने चिंतन तथा लेखन द्वारा साहित्य के प्रचार प्रसार में योगदान दे रहे हैं। 1857 से 1957 तक का सौ वर्ष का काल भारतीय पुनर्जागरण का काल था। यद्यपि 1857 की जनक्रान्ति असफल हो गई थी, तथापि राष्ट्र की आहत आत्मा पुनरूत्थान के मार्ग पर अग्रसर होने को व्याकुल हो उठी थी। 'यही व्याकुलता ब्रह्म–समाज, आर्य समाज, देव समाज, सनातन धर्म सथा आन्दोलनों के रूप में फूट निकली।''[1] सबसे पहले स्वामी दयानन्द ने राष्ट्रीय पुनरूत्थान के हेतु राष्ट्रभाषा के

अनिवार्य महत्व को समझा और इसे आर्य समाज के मूलभूत सिद्धान्तों में सम्मिलित भी कर लिया। आर्य समाज का एक उद्देश्य आर्यभाषा (हिन्दी) का प्रसार करना भी है। इसने गुरूकुलों तथा अन्य शिक्षण–संस्थाओं द्वारा हिन्दी का क्षेत्र व्यापक किया है। राष्ट्रीय जागरण के गाँधी युग में तो राष्ट्र–भाषा प्रचार का कार्यक्रम समग्र राष्ट्रीय आन्दोलन के कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण अंग बन गया।

हिन्दी भाषा और साहित्य के प्रति समर्पित अनेक प्रचारक संस्थाएँ काम कर रही है। इन संस्थाओं ने पहले हिन्दी भाषी क्षेत्रों में, फिर अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में तथा उसके बाद भारत से बाहर के देशों में हिन्दी के प्रचार प्रसार को समृद्धि दी है। हिन्दी–शिक्षण, पुस्तक प्रकाशन, पुस्तकालयों और विद्यालयों की स्थापना, परीक्षाओं के संचालन, संगोष्ठियों के आयोजन, प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ खोज, अनुसन्धान कार्य कोशग्रन्थों के निर्माण अनुवाद कार्य, नागरी लिपि पर विचार और पुनर्विचार के कार्य हिन्दी के मानवीकरण पर विचार, उपाधि और सम्मान–वितरण के कार्य तथा साहितयेतिहास लेखन की श्रृंखला को हिन्दी की इन प्रचारक संस्थाओं के महत्वपूर्ण प्रदेय के रूप में सन्दर्भित किया जा सकता है। इनमें से कुछ संस्थाएं स्वतंत्र और स्वायत्त तौर पर हिन्दी के लिए क्रियाशील हैं तो कुछ सरकारी तौर पर। वैसे सरकारी स्तर से प्रायः प्रत्येक हिन्दी संस्थान को अनुतोष प्राप्त होते रहते हैं। हिन्दी को श्रेष्ठ और उपयोगी साहित्य प्रदान करने तथा उसके सम्यक् प्रसार के प्रति समर्पित भाव का परिचय देने वाली महत्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय संस्थाएं हैं– राष्ट्रभाष प्रचार समिति वर्धा, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, नागरी प्रचारिणी सभा काशी, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा मद्रास, हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद, असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, महाराष्ट्र राष्ट्र सभा पुणे, केरल हिन्दी प्रचार सभा, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा, अखिल भारतीय संस्थान संघ दिल्ली, केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, नागरी लिपि परिषद् नई दिल्ली आदि।

इनके अतिरिक्त भी अनेक संस्थाएं है जिनके हिन्दी विषयक योगदान को कम करके नहीं ऑका जा सकता। मिसाल के तौर पर हिन्दी विद्यापीठ देवघर, गुजरात विद्यापीठ अहमदावाद, हिन्दुस्तानी प्रचार सभा बम्बई, मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद बेंगलौर, कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति बेंगलौर, मणिपुर हिन्दी परिषद् इम्फाल, नागालैण्ड भाषा परिषद् कोहिमा राष्ट्रभाषा प्रचार समिति श्रीनगर (कश्मीर), गोवा राष्ट्रभाषा प्रचार समिति मडगॉव, बंगाल प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति कलकत्ता, हिन्दी साहित्य कला परिषद् पोर्टब्लेयर (अण्डमान तथा निकोबार द्वीप समूह) हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, वर्धा, हिन्दुस्तानी अकादमी प्रयाग, बिहार राष्ट्र भाषा परिषद् पटना, साहित्य अकादमी नई दिल्ली जैसी संस्थाएँ हिन्दी भाषा और साहित्य की खोज और पुनर्खोज में निरन्तर संलग्न देखी जा सकती हैं। हिन्दी के प्रति एक विशाल पैमाने पर सम्पूर्ण राष्ट्र की स्वीकृति का ही परिणाम है कि हिन्दी आज न सिर्फ भारत के कोने–कोने में अपितु विश्व के अधिकांश देशों में जगह बना चुकी है।

बंगाल–विभाजन के विरोध के साथ 'स्वदेशी' का आन्दोलन बढ़ा। स्वदेशी के साथ राष्ट्रीय शिक्षा के लिए आन्दोलन शुरू हुआ। शिक्षा–सम्बंधी आंदोलन का मुख्य सूत्र यह था कि

हर स्तर पर शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो। बंगाल के ख्यातनामा देशभक्त विपिनचन्द्र पाल ने अंग्रेजी में चलने वाले कांग्रेसी आन्दोलन की आलोचना करते हुए कहा था कि ''**अंग्रेजी माध्यम के कारण भारतीय साहित्य पर उसका प्रभाव नहीं पड़ा।''**[2] अंग्रेजी द्वारा दी जाने वाली शिक्षा के विरूद्ध उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा समिति गठित की, जिसका उद्देश्य राष्ट्रीय विद्यालयों में भारतीय भाषाओं के माध्यम से शिक्षा देना था। उन्होंने लिखा था कि ''सरकारी संस्थाओं में हाईस्कूल और कालेज स्तर की शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी थी, राष्ट्रीय समिति ने तुरंत अंग्रेजी को गौण भाषा का स्थान दिया। प्रथम स्थान बांगला और संस्कृत को दिया गया, मुसलमान छात्रों के लिए उर्दू, फारसी और अरबी को। मातृभाषा को शिक्षा का मुख्य माध्यम बनाया गया।''[3] गांधी जी ने दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के माध्यम से हिन्दी प्रचार का अद्वितीय कार्य सम्पन्न किया। ''उनसे ज्यादा धैर्यशाली, अहिंसा मधुर भाषी, दूसरों को समझा बुझा कर सही मार्ग पर लाने वाला नेता दूसरा नहीं हुआ।''[4]

विश्व हिन्दी सम्मेलनों ने यह सिद्ध कर दिया है कि हिंदी भारतीय भाषा मात्र न होकर, अंतर्राष्ट्रीय भाषा भी है। प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन नागपुर (भारत) में (10 से 13 जनवरी 1975 ई0 तक) आयोजित किया गया, जिसे आयोजित करने में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा का प्रमुख योगदान था। इसका मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय एवं अंर्तराष्ट्रीय संदर्भ में हिन्दी की उपलब्धियों एवं संभावनाओं पर विचार करना था। ''हमें उस दिन की प्रतीक्षा करनी चाहिए, जब विश्व के तमाम विकसित देश विज्ञान एवं औद्योगिक विकास की बाते हिन्दी में करें।''[5]

निम्न प्रादेशिक हिन्दी– सेवी संस्थाएँ यत्र–तत्र सदैव हिन्दी के व्यापक प्रचार–प्रसार में सक्रिय योगदान दे रही है–

नागरी प्रचारिणी सभा, काषी की स्थाना 16 जुलाई 1893 ई0 को श्यामसुन्दर, दास जी द्वारा हुई थी। यह वह समय था जब अंग्रेजी, उर्दू और फारसी का बोलवाला था तथा हिन्दी का प्रयोग करने वाले बड़े हेय दृष्टि से देखे जाते थे। नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना क्रीन्स कालेज, वाराणसी के 9वीं कक्षा के तीन छात्रों– बाबू श्यामसुन्दर दास, पं0 रामनारायण मिश्र और शिवकुमार सिंह ने की थी। आधुनिक हिन्दी के जनक भारतेन्दु हरिश्चन्द के फुफेरे भाई बाबू राधाकृष्ण दास इसके पहले अध्यक्ष हुए। इस संस्था का मूल उद्देश्य राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा देवनागरी लिपि का देश व्यापी प्रचार करना था।

सभा की स्थापना के समय तक उत्तर प्रदेशके न्यायालयों में अंग्रेजी और उर्दू ही थी। सभा के प्रयत्न से, जिसमें पं0 मदन मोहनन मालवीय का विशेष योग रहा, सन् 1900 से उत्तर–प्रदेश में नागरी के प्रयोग की आज्ञा हुई और सरकारी कर्मचारियों के लिए हिन्दी और उर्दू दोनों भाषाओं का जानना अनिवार्य कर दिया गया।

आर्यभाषा पुस्तकालय देश में हिन्दी का सबसे बड़ा पुस्तकालय है। डॉ0 गदाधर सिंह ने अपना पुस्तकालय सभा को प्रदान किया और उसी से इसकी स्थापना सभा में सन् 1896 ई0 में हुई। विशेषतः 19वीं शताब्दी अंतिम तथा 20वीं शताब्दी के आरम्भिक वर्षों में हिन्दी के जो महत्वपूर्ण ग्रंथ और पत्रिकाएं छपी थी उनके संग्रह में यह बेजोड़ था। इस समय तक लगभग

15000 हस्तलिखित ग्रंथ भी इसके संग्रह में हो गए हैं। पं0 महावीर प्रसाद द्विवेदी, जगन्नाथ दास रत्नाकर पं0 मायाशंकर याज्ञिक, डॉ0 हीरानंद शास्त्री तथा पं0 रामनारायण मिश्र ने अपने संग्रह भी इस पुस्तकालय को दे दिए हैं जिससे इसकी उपादेयता और बढ़ गई है।

हस्तलिखित ग्रन्थ खोज विभाग के अन्तर्गत प्राचीन अनुपलब्ध साहित्य का अन्वेषण एवं अनुसंधान होता रहता है। इसके द्वारा हिन्दी का व्यवस्थित इतिहास तैयार हो सका है और अनेक अज्ञात लेखक तथा ज्ञात लेखकों की अनेक अज्ञात कर्षतियॉ प्रकाश में आई हैं।

उत्तमोतम ग्रंथों और पत्रपत्रिकाओं का प्रकाशन सभा का मूलभूत उद्देश्यों में रहा है। सभा के उल्लेखनीय प्रकाशनों में हिन्दी शब्द सागर, हिन्दी व्याकरण वैज्ञानिक शब्दावली, सूर, तुलसी, कबीर आदि मुख्य–मुख्य कवियों की ग्रंथावलियॉ, हिन्दी साहित्य का इतिहास, कचहरी, हिन्दी कोश और हिन्दी विश्वकोश आदि ग्रंथ मुख्य है।

8 वर्ष के परीश्रम से काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने 1898 में पारिभाषिक शब्दावली प्रस्तुत की। हिन्दी में पारिभाषिक शब्द निर्माण के इस सर्वप्रथम सर्वाधिक सुनियोजित, संस्थागत प्रयास में गुजराती मराठी और बांग्ला में हुए इसी प्रकार के कार्यों का समुचित उपयोग किया गया। सभा का यह कार्य देश में सभी प्रचलित भाषाओं में वैज्ञानिक शब्दावली और साहित्य के निर्माण की श्रृंखलाबद्ध प्रक्रिया का सूत्रपात्र करने वाला सिद्ध हुआ। सन् 1953 से सभा अपना प्रकाशन कार्य समुचित रूप से चलते रहने के उद्देश्य से अपना मुद्रणालय भी चला रही है।

सुप्रसिद्ध मासिक पत्रिका सरस्वती का श्रीगणेश और उसके संपादनादि की सम्पूर्ण व्यवस्था आरंभ में सभा ने की थी। अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का संगठन और सर्वप्रथम उसका आयोजन भी सभा ने ही किया था।

सभा ने स्वर्ण जयंती और, हीरक जयंती का आयोजन बड़े ही व्यवस्थित ढंग से किया हीरक जयन्ती पर सभा के 60 वर्षीय इतिहास नागरी प्रचारिणी पत्रिका का विशेषांक, हिन्दी शब्द सागर का संशोधन परिवर्धन तथा ग्रंथों की एक पुस्तकमाला प्रकाशित करने की सभा की योजना थी। यथोचित राजकीय सहयोग भी सभा को सुलभ हुआ, परिणामतः सभा के कार्य सम्यक् रूप से सम्पन्न कर रही है।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग की स्थापना 1 मई सन् 1910 ई0 में नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी की एक बैठक में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का एक आयोजन करेन का निश्चय किया गया। इसी के निश्चयानुसार 10 अक्टूबर 1910 को वाराणसी में ही पण्डित मदन मोहन मालवीय के सभापतित्व में पहला सम्मेलन हुआ दूसरा सम्मेलन प्रयाग में करने का प्रस्ताव स्वीकार हुआ और सन् 1911 में दूसरा सम्मेलन इलाहाबाद में पंडित गोविन्द नारायण मिश्र के सभापत्ति में सम्पन्न हुआ। दूसरे सम्मेलन के लिए प्रयाग में 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' नाम से जो समिति बनायी गयी, वही एक संस्था के रूप में प्रयाग में विराजमान है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन का उद्देश्य नागरी लिपि एवं राष्ट्रभाषा हिन्दी का व्यापक प्रचार प्रसार व्यवहार के सम्बंध में क्रियात्मक विचार विनिमय आदि है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन, स्वतंत्रता आन्दोलन के समान ही भाषा– आन्दोलन का साक्षी और राष्ट्रीय गर्व का प्रतीक है। श्री पुरूषोत्तम दास टंडन जी सम्मेलन

का प्रतीक हैं। भाई योगेन्द्रजीत के शब्दों में ''इस सम्मेलन में कई प्रभावशाली व्यक्तियों का संगम हुआ जिसमें महात्मागांधी श्री पुरूषोत्तम दास टण्डन, स्व0 देवदास गांधी, पं0 देवदत्त विद्यार्थी आदि का नाम उल्लेखनीय है।''[6] टंडन जी सम्मेलन के जन्म से ही मंत्री रहे और इसके उत्थान के लिए जिये, उन्हें 'सम्मेलन के प्राण' के नाम से अभिहित किया जाता है। इस संस्था ने हिन्दी में उच्च, कोटि की पुस्तकों (विशेषतः मानविकी से सम्बंधित) का सृजन किया। गांधी जी जैसे लोग भी इससे जुड़े। उन्होंने सन् 1917 में इन्दौर में सम्मेलन की अध्यक्षता की।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन अधिनियम 1962 के द्वारा इसे ''राष्ट्रीय महत्व की संस्था'' घोषित किया गया।

इस अधिवेशन में यह निश्चय हुआ कि इस प्रकार का हिन्दी के साहित्यकारों का सम्मेलन प्रतिवर्ष किया जाए जिससे हिन्दी की उन्नति के प्रयत्नों के साथ–साथ उसकी कठिनाइयों को दूर करने का भी उपाय किया जाय। सम्मेलन ने इस दिशा में अनेक उपयोगी कार्य किए। उसने अपने वार्षिक अधिवेशनों में जनता और शासन से हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाने के सम्बंध में विविध प्रस्ताव पारित किए और हिन्दी के मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर करने के भी उपाय किए। उसने हिन्दी की अनेक परीक्षाएं चलाई, जिससे देश के भिन्न–भिन्न अंचलों में हिन्दी का प्रचार एवं प्रसार हुआ।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन में इन वार्षिक अधिवेशनों की अध्यक्षता भारत वर्ष के सुप्रसिद्ध साहित्यिकों, प्रमुख राजनीतिज्ञों एवं विचारकों ने की। महात्मा गांधी इसके दो बार सभापति हुए। महात्मा गांधी के प्रयत्नों से अहिंदी प्रदेशों में इस संस्था के द्वारा हिन्दी का व्यापक प्रचार हुआ।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की शाखाएं देश के विभिन्न राज्यों में है जैसे– उत्तर प्रदेश, बिहार, दिल्ली, पंजाब, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र तथा बंगाल। अहिन्दी भाषी प्रदेशों में राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा देवनागरी लिपि के प्रचार के लिए एक व्यवस्थित केन्द्र स्थापित किया गया जो राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के नाम से कार्य कर रहा है। इन दोनों, संस्थाओं द्वारा हिंदी की जो विविध परीक्षाएॅ ली जाती हैं, उनमें देश और विदेश के दो लाख से अधिक परीक्षार्थी प्रति वर्ष लगभग 700 परीक्षा केन्द्रों में भाग लेते हैं। ये परीक्षाएॅ प्रथमा, मध्यमा तथा उत्तमा कहलाती है। हिंदी साहित्य विषय के अतिरिक्त आयुर्वेद, अर्थशास्त्र, कृषि, राजनीति एवं शिक्षाशास्त्र में उपाधि परीक्षाएॅ सम्मेलन द्वारा ली जाती है।

सम्मेलन रूपी इस विशाल वटवृक्ष की अनेक शाखाएॅ, प्रशाखाएॅ पूरे देश में हिन्दी प्रचार में लगी हुई है। इनमें कुछ संस्थाएॅ सम्मेलन से सीधे सम्बद्ध है और कुछ राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के माध्यम से जुड़ी हैं।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का 'संग्रहालय अपने युग की एक महत्वपूर्ण पुस्तकालय है। इसमें लगभग 25 हजार पुस्तकों का संग्रह है। सम्मेलन के साहित्य विभाग द्वारा एक त्रैमासिक शोध पत्रिका ''सम्मेलन पत्रिका'' का प्रकाशन होता है। इस पत्रिका में भारतीय साहित्य तथा संस्कृति से सम्बंधित गवेषणात्मक रचनाओं का प्रकाशन होता है।

1935 में समिति में पुनः हिन्दी साहित्य सम्मेलन का आयोजन किया गया था। इस अधिवेशन की अध्यक्षता भी गांधी जी ने की। समिति द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका ''वीणा' देश

की एक मात्र पत्रिका है जो सन् 1927 से निरन्तर प्रकाशित होती रही है।

हिन्दुस्तानी अकादमी, प्रयाग की स्थापना सन् 1927 में हुई थी। इसका मुख्यालय इलाहाबाद में स्थित है। हिन्दी व उसकी सहयोगी भाषाओं को समृद्ध व लोकप्रिय बनाने में अकादमी का योगदान अविस्मरणी है। राष्ट्रभाषा को विश्व की प्रमुख भाषाओं के समकक्ष बैठना और उसकी सर्वागीण उन्नति की एकेडेमी का संकल्प है।

हिन्दूस्तानी भाषा का तात्पर्य हिन्दी + उर्दू से है। इसी हिन्दुस्तानी के संरक्षण, संवर्द्धन के लिए हिन्दुस्तानी, अकादमी की स्थापना 22 जनवरी 1927 में हुई। इसका उद्घाटन 29 मार्च 27 को लखनऊ के तत्कालीन प्रान्तीय गर्वनर सर विलियम मॉरिस द्वारा किया गया।

हिन्दूस्तानी अकादमी, प्रयाग के कार्य है– राज्यभाषा हिन्दी उसके साहित्य आदि व सम्बर्द्धन और विकास करना, मौलिक हिन्दी कर्षतियों, सष्जनात्मक साहित्य का प्रोत्साहन एवं प्रकाशन, विभिन्न भाषाओं की साहित्यिक कर्षतियों का अनुवाद, राज्य सरकार की सहमति से हिन्दी में सन्दर्भ ग्रन्थ तैयार करना तथा उनका प्रकाशन प्रतिष्ठित विद्वानों एवं लेखकों को अकादमी का सदस्य चुनना आदि कार्य एवं उद्देश्य है।

हिन्दूस्तानी अकादमी के दो अंग है– परिषद, और कार्य समिति। अकादमी के अधिसंख्य सदस्य जो रह चुके है– उनमें पं0 सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', राजर्षि पुरूषोंत्तम दास टण्डन, डॉ0 सम्पूर्णानन्द, प्रो0 गोविन्द चन्द्र पाण्डेय प्रमुख है। इसके अध्यक्ष पद पर जिन लब्ध प्रतिष्ठ विद्वानों ने कार्य किया उनमें प्रमुख है– डॉ0 तेज बहादुर सुप्रु राय राजेश्वर बली, रामकुमार वर्मा आदि।

अकादमी द्वारा त्रैमासिक पत्रिका 'हिन्दुस्तानी' (1931) का प्रकाशन भी होता है। 1948 तक यह हिन्दी व उर्दू दोनों भाषाओं में प्रकाशित होती थी। आज केवल हिन्दी में ही प्रकाशित होती है। हिन्दी साहित्य जगत में 'हिन्दुस्तानी' को अतिशय आदर के साथ देखा जाता है। अकादमी द्वारा उच्चकोटि की पुस्तकों का प्रकाशन होता है।

'हिन्दुस्तानी अकादमी' द्वारा अब तक लगभग 30 विद्वानों को उनकी प्रतिष्ठित कर्षतियों के लिए सम्मानित किया गया है। जिसमें उललेखनीय है– मुंशी प्रेमचन्द, जगन्नाथ दास 'रत्नाकर' मौलाना सैय्द अली नकवी सफी, बाबू गुलाब राय आदि।

अकादमी की आय का मुख्य साधन सरकारी अनुदान, प्रकाशित पुस्तकों की बिक्री व सभागर से प्राप्त किराया है। इस समय अकादमी में स्तरीय पुस्तकों का मुद्रण/ प्रकाशन व दुर्लभ पुस्तकों का पुनर्मुद्रण कार्य तीव्रगति से चल रहा है।

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान की स्थापना आगरा में हुई थी। इस संस्था का हिन्दी के सेवा में बहुत योगदान रहा है। यह विभिन्न प्रकार के पुरस्कारों का वितरण करती है।

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ की स्थापना 30 दिसम्बर, 1976 को हुई। जिसमें तत्कालीन हिन्दी समिति, उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी एवं शासन की कतिपय अन्य योजनाओं का एकीकरण किया गया। इस संस्था को भारतीय संस्कृति के प्रबल समर्थक राजर्षि पुरूषोत्तम दास टण्डन के नाम का गौरव प्राप्त है।

संस्थान की महत्वपूर्ण प्रकाशन योजना अन्तर्गत साहित्य, विज्ञान, राजनीतिशास्त्र, इतिहास और साहित्य आदि विषयों पर उच्च कोटि के लगभग 700 ग्रन्थ प्रकाशित किए गये है। ज्ञान विज्ञान के विविध विषयों की पुस्तकों की हिन्दी में प्रकाशित करना संस्थान के प्रमुख उद्देश्यों में एक है। हिन्दी के सन्दर्भ ग्रन्थों की रचना तथा कोशों के निर्माण व प्रकाशन तथा पाठकों को सुलभ कराने का कार्य में भी अग्रसर है। दिवंगत साहित्यकारों की स्तुति में संस्थान ने कई स्मृति ग्रन्थ प्रकाशित किये है। इसके अतिरिक्त सूर, तुलसी, कबीर एवं रविदास आदि की स्मृति को भी जीवन्त रखने के लिए लघु पुस्तिकाओं का प्रकाशन भी किया जा रहा है। जिससे अधिकाधिक पाठक लाभान्वित हो सके।

संस्थान द्वारा पुरस्कार, साहित्यिक समारोह साहित्यकार कल्याण कोष, प्रकाशन अनुदान, संस्थाओं के साथ कार्यशाला, पत्रिका का प्रकाशन, स्मृति संरक्षण आदि योजनाओं के माध्यम से महत्वपूर्ण कार्य किए जा रहे हैं। पत्रिका योजना के अन्तर्गत साहित्य भारती त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

हिन्दी संस्थान में उत्कृष्ट साहित्यारों को अलंकृत करने की विभिन्न योजनाएँ संचालित हैं।

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान स्वायत्तशासी संस्था है। विभिन्न योजनाओं के लिए शासन के भाष विभाग से प्रति वर्ष प्राप्त अनुदान से योजनाओं को क्रियान्वित किया जाता है। अभी तक हिन्दी संस्थान ने चार दशकों में आधार बनाया है। अभी इसको शिखर पर पहुचना है। हिन्दी सेवियों और हिन्दी साहितयकारों का स्नेहाशीष ही इस संस्थान के लिए आगे की यात्रा के लिए पाथेय होगा।

इस प्रकार हम कह सकते है कि उपर्युक्त संस्थाओं के अतिरिक्त भी अनेक प्रादेशिक हिन्दी सेवी संस्थाएँ हिन्दी के प्रसार–प्रचार के कार्य की ओर तत्परता के साथ लगी हुई हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1– भाई योगेन्द्रजीत, *हिन्दी भाषा–शिक्षण,* विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2, संस्करण 2009, पृ0 **457**.

2– विपिन चंद्र पाल, *दि स्विरिट ऑफ इंडियन नेशनलिज्म,* पृ0 **15**.

3– वही, पृ0 **77**.

4– रामविलास शर्मा, *स्वाधीनता संग्राम बदलते परिप्रेक्ष्य,* हिन्दी माध्यम कर्यान्वय निदेशालय, दिल्ली, सं0 1992, पृ0 **168–169.**

5– शेरसिंह बिष्ट, *हिन्दी भाषा एवं साहित्य : एक अंतर्यात्रा,* इंडियन पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स दिल्ली सं0 2005, पृ0 **7.**

6– भाई योगेन्द्रजीत *हिन्दी भाषा शिक्षण,* पुस्तक मन्दिर आगरा–2, सं0 2009, पृ0 **459.**